पुनरावृत्ति कार्य-पत्र–11

पृष्ठ संख्या–259 (नए पाठ्यक्रमानुसार)

अलंकार

निर्धारित समय: 25 मिनट **अधिकतम अंक : 18**

1. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित उपयुक्त अलंकारों का चयन कीजिए। $1 \times 5 = 5$

1. जो रहीम गति दीप की कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरो होय।

(क) श्लेष अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

2. माली आवत देखि कलियन करे पुकार।
फूले फूले चुन लियो कलि हमारी बार॥

(क) श्लेष अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

3. ले चला साथ मैं तुझे कनक।
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण॥

(क) श्लेष अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

4. 'उषा सुनहरी तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।'

(क) श्लेष अलंकार

(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार

(घ) मानवीकरण अलंकार

5. रो-रोकर सिसक-सिसककर, कहता करुण कहानी।
तुम सुमन नोचते, सुनते, करते जानी अनजानी।

(क) श्लेष अलंकार

(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार

(घ) मानवीकरण अलंकार

2. निम्नलिखित अलंकारों से संबंधित उदाहरणों का चयन कीजिए।

$1 \times 5 = 5$

1. श्लेष अलंकार

(क) मधुबन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी कलियाँ

(ख) नील गगन-सा शांत हृदय सा हो रहा।

(ग) कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा

(घ) इनमें से कोई नहीं।

2. उत्प्रेक्षा अलंकार

(क) पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से।
मानो झूम रहे हैं तरु, भी, मंद पवन के झोंकों से।।

(ख) सुबरन को ढूँढ़त फिरत कवि व्यभिचारी चोर।

(ग) सिंधु-सेज पर धरा-वधू अब, तनिक संकुचित बैठी-सी।

(घ) यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।

3. अतिशयोक्ति अलंकार

(क) सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी।

(ख) सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी।

(ग) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े
शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

4. मानवीकरण अलंकार

(क) कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो।

(ख) तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान, मृतक से भी डाल देगी जान।

(ग) बहुत काली सिल, करा-ऐ लाल केसर-से कि जैसे धुल गई हो।

(घ) जहाँ सुमति तहाँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति निधाना।।

5. अतिशयोक्ति अलंकार

(क) पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन सँवर के।।

(ख) बहुत काली सिल
जरा से लाल केसर-से कि जैसे धुल गई हो

(ग) देख लो साकेत नगरी है यही।
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। $1 \times 8 = 8$

1. 'श्लेष' का शाब्दिक अर्थ होता है–

(क) चिपकना (ख) हटाना

(ग) रोकना (घ) अलगाव

2. ''दे रहा हो कोकिला सानंद, सुमन को ज्यों मधुमय संदेश''– इनमें से किस शब्द में श्लेष अलंकार है।

(क) 'कोकिला' शब्द में (ख) 'सुमन' शब्द में

(ग) 'मधुमय' शब्द में (घ) 'ख' और 'ग' दोनों

3. अलंकार-शास्त्र में प्रस्तुत को कहते हैं–

(क) उपमान

(ख) वाचक

(ग) उपमेय

(घ) अप्रस्तुत

4. जिस काव्य में संभावना व्यक्त की जाती है वहाँ होता है–

(क) श्लेष अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) मानवीकरण अलंकार (ख) अतिशयोक्ति अलंकार

5. 'पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के'–इसमें अलंकार है–

(क) श्लेष अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

6. किसका वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर करने पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है?

(क) प्रस्तुत का वर्णन (ख) अप्रस्तुत का वर्णन

(ग) उपमेय का वर्णन (घ) 'क' और 'ग' दोनों

7. 'मुख बाल रवि सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ' में उपमान है–

(क) मुख (ख) बाल रवि

(ग) लाल (ख) बोधित

8. 'सिंधु-सेज पर धरा वधु अब, तनिक संकुचित बैठी-सी'– इसमें कौन-सा अलंकार है?

(क) उत्प्रेक्षा अलंकार (ख) अतिशयोक्ति अलंकार

(ग) मानवीकरण अलंकार (ख) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–

1. 1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क)

2. 1. (क) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग)

3. 1. (क) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)

6. (घ) 7. (क्ष) 8. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य-पत्र–12

पृष्ठ संख्या–261 (नए पाठ्यक्रमानुसार)

अलंकार

निर्धारित समयः 25 मिनट **अधिकतम अंक : 16**

1. अंतर स्पष्ट कीजिए– **2 × 2 = 4**

(क) शब्दालंकार तथा अर्थालंकार

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण

.....

.....

.....

.....

2. अर्थालंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। **2**

.....

.....

.....

.....

3. प्रत्येक अलंकार के एक-एक उदाहरण लिखिए– **2**

- **श्लेष** .....
- **उत्प्रेक्षा** .....
- **अतिशयोक्ति** .....
- **मानवीकरण** .....

4. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-से अलंकार हैं? लिखिए। **1 × 8 = 8**

(क) मधुबन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ।

.....

(ख) कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिमकणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।

.....

(ग) तुम भूल गए क्या मातृ प्रकृति को
तुम जिसके आँगन में खेले-कूदे।
जिसके आँचल में सोए-जागे।

.....

(घ) सीधी चलते राह जो, रहते सदा निशंक।
जो करते विप्लव उन्हें 'हरि' का है आतंक।
.....

(ङ) ले चला साथ मैं तुझे कनक।
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण।।
.....

(च) धनुष उठाया ज्यों ही उसने और चढ़ाया बाण।
धरा-सिंधु नभ काँपे सहसा, विकल हुए जीवीं के प्राण।।
.....

(छ) फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।
.....

(ज) उषा सुनहरे तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।
.....

उत्तर–

1. (क) शब्दालंकार तथा अर्थालंकार में अंतर (देखें, पृष्ठ सं० - 41)

(ख) उत्प्रेक्षा और मानवीकरण अलंकार में अंतर–

उत्प्रेक्षा	मानवीकरण
'जहाँ प्रस्तुत पर अप्रस्तुत की संभावना व्यक्त की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है; जैसे– 'सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात। मनहुँ नीलमणि सैल पर श्याम सलोने गाता।	जहाँ प्रकृति का वर्णन मानव या मानवी स्वरूप में किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे– उषा सुनहले तीर बरसाती, जयलक्ष्मी-सी उदित हुई।

2. कवि जब अपने काव्य में अर्थ के स्तर पर सौंदर्य उत्पन्न करता है तब वहाँ अर्थालंकार की व्युत्पत्ति होती है।

उदाहरण – कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिमकणों से पूर्ण मानों हो गए पंकज नए।

3. श्लेष – मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित दुति होय।।
उत्प्रेक्षा – सिर फट गया उसका वहीं, मानो अरुण रंग का घड़ा।
अतिशयोक्ति – मुख बाल रवि सम लाल होकर
ज्वाल-सा बोधित हुआ।
मानवीकरण – साकेत-शैय्या पर दुग्ध-धवल
तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल
लेटी है शांत, क्लांत, निश्चल।

4. (क) श्लेष अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार
(ग) मानवीकरण अलंकार (घ) श्लेष अलंकार
(ङ) उत्प्रेक्षा अलंकार (च) अतिशयोक्ति अलंकार
(छ) मानवीकरण अलंकार (ज) मानवीकरण अलंकार